(रचयिता—आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

नहीं समझते नहीं जानते, हम सब बच्चे हैं नादान।
कैसे तुम्हें मनाएँ भगवन्, हम सब बच्चे हैं अनजान॥

नहीं समझते...

माँ जिनवाणी कहती हमसे, पढ़ने से बनते विद्वान।
ज्ञान में सोओ-ज्ञान में जागो, बन जाओगे तुम भगवान॥

नहीं समझते...

श्री गुरु जी बतलाते निशदिन, करो आचरण धर्म प्रधान।
सेवा भाव सदा ही पालो, सूत्र यही जीवन उत्थान॥

नहीं समझते...

हम सब तो अज्ञानी बच्चे, नहीं हमें प्रभु कुछ भी ज्ञान।
अँखियाँ खोलो कुछ तो बोलो, इतने न रूठो भगवान॥

नहीं समझते...